IJAER/July-August 2023/Volume-12/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

धूमिल की कविता में मोहभंग : नन्द किशोर नवल

अपर्णा शुक्ला,

शोध छात्रा हिंदी विभाग मगध विश्विद्यालय

डॉ० भरत सिंह

निर्देशक , प्रोफेसर हिंदी विभाग मगध विश्विद्यालय, बोध गया

परिचय:

नवल जी का जन्म २ सितम्बर १९३७ को चांदपुरा वैशाली में हुआ। आप की पहली रचना वर्ष १९५४ में आई जब आप हाई स्कूल में थे। हिंदी की उच्च शिक्षा ग्रहण के दौरान ही आप का झुकाव आलोचना की तरफ़ उन्मुख हुआ। आप ने ५-६ वर्षो तक त्रैमासिक आलोचना से भी सहसमपादक के रूप में भी कार्य किये। आप की प्रमुख प्रकाशित कृतियाँ कविता की मुक्ति, हिंदी आलोचना का विकास, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्त, निराला रचनावली इत्यादि है। पहले आप पटना विश्वद्यालय में अध्ययन अध्यापन किये उसके बाद दरभंगा विश्वद्यालय में अध्यापन का काम किये। दरभंगा विश्वद्यालय में आप प्राध्यापक के रूप में पदस्थापित हुए। जहा पर आप रीडर फिर प्रोफेसर के रूप में भी सेवा दी। आप ३१ अक्टूबर , १९९८ को सेवा मुक्त हुए।[1] नवल जी पढ़ाकू किस्म के अध्यापक थे। आप पढ़ने के साथ लिखने में भी बहुत सिद्धहस्त थे। आप प्रायः सभी कवियों तथा उनकी रचनाओं का भी सूक्षम अध्ययन किया। वस्तुतः नवल जी का पूरा जीवन साहित्यिक और शैक्षिक था। जीवन के आरम्भिक दिनों से ही लिखने लगे थे जो जीवनप्रयत्न चलता रहा। आप अपने गुरु जी लोगो का बहुत सम्मान करते थे। आप अपने गुरु राम सोहाग सिंह जी को आजीवन आदर किए और उनके बारे में लिखते है कि गुरु जी मेहनती, बुद्धिमान शिष्यों पर स्नेह करने वाले तथा परम उदार व्यक्ति थे। गुरु जी बुद्धिमान और विवेकी थे।[2]

भूमिका:

नन्द किशोर नवल हिंदी साहित्य में मार्क्सवादी चेतना संपन्न शीर्षस्थ आलोचकों में से एक के रूप में मान्य रहे हैं | उनके अध्ययन एवं लेखन का क्षेत्र व्यापक रहा है | निराला जी एवं मुक्तिबोध जी उनके अध्ययन का केन्द्र रहे हैं| अपने समकालीन लेखन में नए से नये कवियों पर लिखने वाले नवल जी ने तुलसीदास एवं सूरदास से लेकर रीतिकाव्य तक पर कलम चलायी है | समकालीन कवियों में से एक सुदामा पांडेय 'धूमिल ' जी भी नवल जी के आलोचना के विषय रहे है |

प्रस्तुत लेख में नवल जी धूमिल जी के बारे में प्रकाश डालते है | जिस मोहभंग का विरोध करते हुए नामवर सिंह जी कहते है , "हमारी पीढ़ी के सम्बन्ध में जो १९४६ तथा उसके एक - दो साल बाद पैदा हुयी स्वतंत्रता के बाद मोहभंग, आदर्शों तथा सपनों के टूटने और विघटन की बात है | "[3] उसी मोहभंग को नवल जी धूमिल जी की रचनाओं में देखते हैं तथा दिखाने का प्रयास करते हैं |

धूमिल जी ही नहीं अपितु नयी कविता के अन्य कवियों की कविताओं में भी मोहभंग विशेष रूप से देखने को मिलता है | यह मोहभंग देश की आज़ादी के साथ ही कविताओं में भी दिखने लगता है | आज़ादी से पहले देशवाशियों में , कवियों ने जिस आज़ाद भारत का सपना देखा था , जिस जनतंत्र की कल्पना की थी , आज़ादी के बाद उसे टूटता हुआ पाया | जिससे कवियों , रचनाकारों के साथ - साथ अन्य देशवाशियों में भी जनतंत्र और व्यवस्था के प्रति मोहभंग उत्पन्न हुआ तथा यही मोहभंग कवियों व रचनाकारों की कविताओं और रचनाओं में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है |

एक लम्बे समय से परतंत्रता की जंजीर से बंधी हुई जनता ने स्वतंत्र भारत के लिए बहुत प्रयत्न किया था , आज़ादी और आज़ाद भारत के लिए अपना बहुत कुछ खो दिया था, परन्तु आज़ादी के बाद व्यवस्था द्वारा उसी जनता को छला जाने लगा , यह असह्य था | अतः

---

[1] नन्द किशोर नवल, आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ , नई कविता दिल्ली , प्रथम संस्करण २०१२।

[2] नन्द किशोर नवल, मूरते माटी और सोने की (संस्मरण पुस्तक), प्रकाशक राज कमल प्रकाशक, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष २०१७।

[3] नन्द किशोर नवल समकालीन काव्य -यात्रा प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ संख्या २४५ प्रकाशक किताबघर २४ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली ११०००२

कवियों व रचनाकारों ने देश की नासमझ जनता को अपनी रचनाओं के माध्यम से यह अवगत करने का प्रयास किया की उनके साथ छल किया जा रहा है और चूँकि वे अब एक जनतांत्रिक देश के निवासी हैं अतः उन्हें हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठना चाहिए अपितु इस दुर्व्यवस्था का विरोध करना चाहिए |

नवल जी धूमिल जी को युवा कविता का अग्रणी कवि बताने के साथ ही यह भी बताते हैं की धूमिल जी की रचनाओं में रघुवीर सहाय, श्रीकांत वर्मा और केदारनाथ सिंह जी का विशेष योगदान है | चूँकि ये तीनों ही नयी कविता के कवि हैं और मोहभंग की प्रक्रिया से गुजरने के बाद नए ढंग से कविता लिख रहे थे | अतः धूमिल जी पर भी इसका विशेष प्रभाव पड़ा था| नयी कविता में नेहरू- युग से मोहभंग की पीड़ा व्यापक स्तर पर व्यक्त हुई है। जयप्रकाश नारायण और लोहिया का समाजवादी दर्शन इस समय जनता की आस्था का पर्याय बना और नयी कविता का एक बड़ा कवि समूह लोहियावादी विचारधारा से प्रभावित हुआ। नवल जी की खोज यह थी यदि धूमिल जी को मोहभंग हुआ तो वह नयी कविता के कवियों से किस प्रकार अलग था|

आज़ादी से पहले भारतवासियों ने आज़ाद भारत की जो सुन्दर तस्वीर बनायीं थी , व्यवस्था ने उस तस्वीर को निर्ममता से नष्ट कर दिया। जिन लोगों ने जनता को आज़ादी का स्वप्न दिखाया था , उन्ही के द्वारा जनता के स्वप्न को तोड़ दिया। व्यवस्था में बैठे लोगों के व्यवहार में परिवर्तन से सभी को ठेस पहुंची तथा आक्रोश उत्पन्न हुआ जिसका प्रभाव रचनाकारों की रचनाओं में में भी स्पष्ट दीखता है। इसे ही मोहभंग की संज्ञा दी गई। परन्तु सभी रचनाकारों की रचनाओं में मोहभंग में अंतर मिलता है , यह अंतर सूक्ष्म रूप में ही मिलता है , परन्तु इससे रचनाकारों पर मोहभंग का अलग - अलग रूप से प्रभाव दीखता है।

नवल जी ने ही नहीं अपितु विभिन्न आलोचकों ने धूमिल जी की रचनाओं में मोहभंग को देखा है, कभी आज़ादी से मोहभंग ,कभी जनतंत्र से मोहभंग और कभी व्यवस्था से मोहभंग | नवल जी ने धूमिल जी की प्रसिद्ध कविता 'पटकथा' के आरम्भ में विस्तार से उनका आज़ादी के लिए मोह और आज़ादी के बाद आज़ाद भारत से उसके भंग होने के वर्णन का विस्तार से उल्लेख भी किया है | साथ ही धूमिल जी की दो अन्य कविताओं , 'बीस साल बाद' और 'शहर में सूर्यास्त' में भी मोहभंग के वर्णन की विस्तारपूर्वक व्याख्या भी करते है | इन कविताओं में आज़ादी और आज़ाद भारत से उनके मोहभंग का वर्णन मिलता है |

नवल जी का मानना है कि धूमिल जी की कविताओं में भी मोहभंग देखने को मिलता है परन्तु नयी कविता के अन्य कवियों के मोहभंग से अलग है परन्तु यह अंतर अत्यंत सूक्ष्म होने के कारण स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं होता | नवल जी के शब्दों में, " 'पटकथा' धूमिल के यथार्थ-बोध की परिपक्वता का चरण परिणाम है | स्वभावतः उसमें नेहरू के प्रति उनके भाव और विचार बदले हुए हैं | इस प्रसंग का ज़िक्र यहाँ इसलिए किया गया है की हम धूमिल की उस प्रक्रिया से अवगत हो सकें , जिसे मोहभंग की प्रक्रिया के अलावा और कुछ नहीं कह सकते हैं | लेकिन उनका मोहभंग नयी कविता के अन्य कवियों से भिन्न कैसे है? निश्चय ही वह भिन्नता बहुत स्थूल न होकर सूक्ष्म है | "[4]

धूमिल जी तथा नयी कविता के अन्य कवियों में मोहभंग में यह भिन्नता है कि अन्य कवि मोहभंग के कारण यथार्थवाद की तरफ अग्रसित हुए तथा आरम्भिक कविताओं को बिलकुल ही छोड़ दिए जबकि धूमिल जी ने ऐसा नहीं किया | नवल जी कहते हैं , " नयी कविता के कवियों में मोहभंग से पैदा होने वाली गहरी पीड़ा है , लेकिन धूमिल को झटका तो लगता है , लेकिन वे चीत्कार नहीं करते , जैसे तमाम चीज़ों को स्वाभाविक रूप में लेते हैं |"[5]

नवल जी अन्य कवियों से तुलना करते हुए बताते हैं की रघुवीर सहाय जी और धूमिल जी दोनों ही अपने को जनतंत्र और व्यवस्था पर केंद्रित करते हैं , लेकिन रघुवीर सहाय जी में जनतंत्र के प्रति आलोचना की भावना है , तो धूमिल जी में आक्रोश है | धूमिल जी जनतांत्रिक व्यवस्था की सत्यता को उजागिर करते हैं | धूमिल जी स्पष्ट एवं दृढ़ जनप्रतिबद्धता के साथ शहर तथा गांव दोनों पर ही सामान दृष्टि रखते हैं | धूमिल जी भारत में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को समान दृष्टि से देखते हैं। उनके लिए भारत देश में निवास करने वाला प्रत्येक व्यक्ति , चाहे वह गाँव में रहता हो या शहर में समान है। भारत के गांव में और शहर में , दोनों स्थानों पर रहने वाले व्यक्ति का अपने देश के प्रति समान कर्त्तव्य है और समान अधिकार दोनों ही है। जिस प्रकार देश के प्रत्येक नागरिक का देश

[4] नन्द किशोर नवल समकालीन काव्य -यात्रा प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ संख्या २४८ प्रकाशक किताबघर २४ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली ११०००२

[5] नन्द किशोर नवल समकालीन काव्य -यात्रा प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ संख्या २४८ प्रकाशक किताबघर २४ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली ११०००२

को स्वतंत्रता दिलाने में समान योगदान रहा , जिस प्रकार देश की उन्नति और प्रगति में समान रूप से योगदान होना चाहिए उसी प्रकार प्रत्येक नागरिक को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक भी होना चाहिए। धूमिल जी सदैव यह सोचते थे कि देश की ग्रामीण व शहरी जनता को राजनीति का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है साथ ही साथ सत्ता और व्यवस्था की पूरी जानकारी होना भी बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि जानकारी के आभाव में जनता को व्यवस्था द्वारा सदैव मूर्ख बनाया जाता रहेगा। परन्तु यदि जनता शिक्षित और जानकर रहेगी तो वह ,एक जनतांत्रिक व लोकतांत्रिक देश की नागरिक होने के नाते देश को ग़लत सत्ता और व्यवस्था के बंधन से मुक्त करा सकती है। इसीलिए धूमिल जी अपनी कविताओं के माध्यम से जनता को जागरूक करने के साथ - साथ उनसे बातें भी करते थे और बातों - बातों में उन्हें राजनीति व राजनीतिक व्यवस्था के बारे में बताते रहते थे। धूमिल जी गाँव में भी जाते थे , तो वहां भी लोगों के बीच में बैठकर उन्हें उनके कर्तव्यों और अधिकारों के बारे में बताते रहते थे। वे किसानों के , गाँव के शिक्षित व अशिक्षित सभी लोगों के , युवा , प्रौढ़ और वरिष्ठ सभी तरह के लोगों के साथ बैठकर राजनीतिक बातों पैर चर्चा करते थे। इस सन्दर्भ में नवल जी ने धूमिल जी के छोटे भाई कन्हैया पांडेय जी के एक लेख का उल्लेख करते हैं , जिसमे उन्होंने धूमिल जी के बारे में बताते हुए लिखा है की " धूमिल किसानों के निर्भीक नेता थे। रात - दिन वे उन्हें घंटों समझाया करते थे। सोते - जागते , रात - दिन उन्हें यही धुन सवार रहती थी कि किसान अपने मालिक कैसे बनें। अपने 'पम्पिंग सेट्स ' पर वे दस - बारह बजे रात्रि तक लोगों से बातें करते रहते थे। उन्हें सर्कार की अच्छाइयों और बुराइयों का ज्ञान करते थे। देश - विदेश की ख़बरें बतलाते थे। धूमिल में संगठन की अद्भुत क्षमता थी। गांव की राजनीति में उनका क्या स्थान था , यह इसी से समझा जा सकता है कि उन्होंने जिस व्यक्ति को चाहा , वही ग्राम प्रधान चुना गया। वे गांव को क आदर्श गांव बनाना चाहते थे। वे निकट भविष्य में सरकारी नौकरी छोड़कर स्वतंत्र रूप से ग्रामोद्धार का कार्य करना चाहते थे। "[6]

चूँकि केदारनाथ सिंह जी जनता के पक्षधर कवि हैं अतः उन्हें जनता से कोई शिकायत नहीं है | लेकिन धूमिल जी को जनता की निष्क्रियता और नासमझी से शिकायत भी है और जनता से नाराजगी भी | भारत की जनता में आक्रोश की कमी है साथ ही साथ वह भोली भी है। इसके साथ ही भारतीय जनता में आत्मबोध की भी अत्यंत हीनता है। देखा जाये तो इसी कारण भारत को तथा यहाँ की जनता एक लम्बे समय के लिए अंग्रेजों की गुलामी करनी पड़ी। अपने लिए , अपने अस्तित्व के लिए , अपने राष्ट्र के लिए तथा अपने अधिकारों के लिए लड़ना भारत की जनता को नहीं आता है। इसीलिए इनकी तुलना हनुमान जी से भी की गयी है। क्योंकि जिस प्रकार हनुमान जी को अपनी अतुलित व अपार शक्तियों के बारे में भी याद नहीं था तथा याद दिलाने पर ही याद आता है। उसी प्रकार भारत की जनता को भी समय - समय पर उसकी शक्तियों के बारे में याद दिलाना पड़ता है, उसके अस्तित्व व अधिकारों को भी उन्हें याद दिलाना पड़ता है। धूमिल जी भी अपनी विभिन्न कविताओं के माध्यम से यही कार्य पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा के साथ करते हैं। जनता में अपने व अपने राष्ट्र के प्रति अकर्मण्यता तथा अपने अधिकारों के प्रति उदासीनता धूमिल जी से देखि नहीं जाती। धूमिल जी अपने देश की जनता को मिटटी के समान कोमल नहीं अपितु वज्र के समान कठोर देखना चाहते हैं। धूमिल अपनी 'प्रौढ़ शिक्षा' शीर्षक कविता में जनता को उद्बोधित करते हुए कहते हैं कि गीली मिट्टी की तरह मत बनो , जिसे कोई भी किसी आकर में ढाल सके | साथ ही जनता से लता की तरह दूसरों पर निर्भर न रहने के लिए भी कहते हैं | वे जनता से वृक्ष की तरह तन कर , अपनी जड़ पकड़ कर , अडिग होने के लिये प्रेरित करते हैं |

यदा कदा धूमिल जी को सपाटबयानी का कवि भी कहा गया है , परन्तु नवल जी ने इसका विरोध किया है | धूमिल जी को सपाटबयानी का कवि कहना पूर्णरूप से सही नहीं है। धूमिल जी ने अपनी रचनाओं में मुहावरों का अत्यधिक प्रयोग किया है। धूमिल जी द्वारा प्रयाग किये गए मुहावरे कठिन व दुरूह भी हैं साथ ही धूमिल जी ने अपनी कविताओं में बिम्ब का प्रयोग भी अधिक ही किया है और वे बिंब भी अत्यंत विलक्षण प्रतीत होते हैं। इनकी रचनाओं में विशेष प्रकार के मुहावरों व विशिष्ट बिम्बों के प्रयोग पर यदि दृष्टि डाली जाये तो धूमिल जी सपाटबयानी के कवि नहीं कहे जा सकते। अपितु इन्हें सपाटबयानी का कवि कहना इनके साथ अन्याय होगा। नवल जी के शब्दों में , " उन्हें जो वक्तव्य अथवा सपाटबयानी का कवि मन जाता है , वह बहुत काम अंशों में ही सही है , क्योंकि उन जैसा दुरूह मुहावरा अपनी कविता में बहुत काम कवियों ने प्रयुक्त किया है | उनके बिम्ब नयी कविता की सरणि पर रचे हुए नहीं हैं , लेकिन वे विलक्षण हैं |"[7]

[6] नन्द किशोर नवल समकालीन काव्य -यात्रा प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ संख्या २४९ प्रकाशक किताबघ २४ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली ११०००२

[7] नन्द किशोर नवल समकालीन काव्य -यात्रा प्रथम संस्करण १९९४ पृष्ठ संख्या २५६ प्रकाशक किताबघर २४ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली ११०००२

निष्कर्ष:

अंत में नवल जी, धूमिल जी के बारे में कहते है कि धूमिल जी की रचनाओं में आज़ादी के सपनों के मोहभंग की पीड़ा और आक्रोश की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति देखने को मिलती है| धूमिल जी की कविताओं का परम लक्ष्य उस व्यवस्था को दर्पण दिखाना था , जिसने जनता के साथ और राष्ट्र के साथ छल किया |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

१ नन्द किशोर नवल मूरते माटी और सोने की , संस्मरण पुस्तक, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष २०१७।

२ कमल नाथ मिश्र साहित्यिक यात्रा त्रैमासिक वर्ष (०६), अंक -२०२१-२२, जनवरी -जून २०२०।

३ नन्द किशोर नवल समकालीन काव्य -यात्रा प्रथम संस्करण १९९४ प्रकाशक किताबघर २४ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली ११०००२

४ नन्द किशोर नवल, आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ , नई कविता दिल्ली , प्रथम संस्करण २०१२।

५ नन्द किशोर नवल, मूरते माटी और सोने की (संस्मरण पुस्तक), प्रकाशक राज कमल प्रकाशक, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष २०१७।

६ डॉ० निर्मला जैन , हिंदी आलोचना का दूसरा पाठ , प्रकाशक राज कमल प्रकाशक, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष २०१४।

७ नन्द किशोर नवल, कविता पहचान का संकट , प्रकाशक भारती ज्ञानपीठ , नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष २००६ ।

८ नन्द किशोर नवल, स्वतंत्रता पुकारती , प्रकाशक भारती ज्ञानपीठ , नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष २००६ ।

९ नन्द किशोर नवल, दृश्यालेख , प्रकाशक भारती ज्ञानपीठ , नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष २००६ ।

१० नन्द किशोर नवल, प्रेमचंद का सौंदर्य शास्त्र , प्रकाशक वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष २०२०।